भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
लोकसभा
अतारांकित प्रश्न संख्या- 2808
दिनांक 18 मार्च, 2025 के लिए प्रश्न

विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन

2808. श्री मनीष जायसवाल:

श्री देवुसिंह चौहान:

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूओएएच) के साथ साझेदारी से भारतीय पशुपालकों, विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों को किस हद तक लाभ होगा;

(ख) पशुधन प्रबंधन में रोग नियंत्रण, टीकाकरण और जैव सुरक्षा जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का रोडमैप किस हद तक समाधान करता है;

(ग) इस साझेदारी के अंतर्गत डेयरी और मांस उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा में सुधार के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं;

(घ) इस पहल से पशुधन और डेयरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन में किस हद तक योगदान मिला है; और

(ङ) क्या इस पहल में भाग लेने के लिए निजी कंपनियों के लिए कोई वित्तीय प्रोत्साहन या राजसहायता है और यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री
(प्रो. एस. पी. सिंह बघेल)

(क) और (ख) विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूओएएच), जिसे पहले ओआईई के नाम से जाना जाता था, एक अंतर-सरकारी संगठन है जो वैश्विक स्तर पर पशु स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। भारत सहित 183 सदस्य देशों के साथ, डब्ल्यूओएएच स्थलीय पशु स्वास्थ्य कोड (टीएएचसी) के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मानक स्थापित करता है जो रोग निगरानी, निदान, जैव सुरक्षा, टीकाकरण तथा पशुओं और पशु उत्पादों के सुरक्षित व्यापार पर विज्ञान आधारित दिशानिर्देश प्रदान करता है। डब्ल्यूओएएच पशु चिकित्सा सेवाओं के निष्पादन (पीवीएस) मार्ग, जो पशु चिकित्सा अवसंरचना का मूल्यांकन करता है और उसे सुदृढ़ करता है, के माध्यम से भी सदस्य देशों की सहायता करता है तथा रोग नियंत्रण पहलों के माध्यम से सीमा पारीय पशु रोगों जैसे खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी), पेस्ट डेस पेटिट्स रुमिनेंट्स (पीपीआर), और अत्यधिक रोगजनक एवियन इन्फ्लूएंजा (एचपीएआई) को लक्षित करता है। विशेषरूप से, भारत के एफएमडी नियंत्रण कार्यक्रम की डब्ल्यूओएएच ने भी पुष्टि की है और 32 एचपीएआई-मुक्त पॉल्ट्री कम्पार्टमेंट की भारत की स्व-घोषणा को भी अनुमोदित कर दिया गया है। इसके अलावा, डब्ल्यूओएएच ने विशेष संस्थानों को डब्ल्यूओएएच संदर्भ प्रयोगशालाओं के रूप में नामित किया है, तथा भारत में एचपीएआई, रेबीज, लेप्टोस्पायरोसिस, पीपीआर, तथा इक्काइन पाइरोप्लाज़मोसिस के लिए ऐसी प्रयोगशालाएं हैं।

(ग) और (घ) डब्ल्यूओएएच के मानक आजीविका सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि पशुधन उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानदंडों पर खरे उतरें, रोग-मुक्त स्थिति बनाए रखें, जिससे निर्यात को बढ़ावा मिलता है और अपनी आय के लिए पशुधन पर निर्भर किसानों को सहायता मिलती है। टीएएचसी पशुधन और पशुधन उत्पादों के लिए पशु चिकित्सा स्वास्थ्य प्रमाणन मानक स्थापित करके व्यापार को भी सुविधाजनक बनाता है, जिससे पशुधन उत्पादकों के लिए बाजार पहुंच और आर्थिक अवसरों में और वृद्धि होती है।

(ङ) डब्ल्यूओएएच की सदस्यता निजी कंपनियों के लिए कोई वित्तीय प्रोत्साहन या सब्सिडी प्रदान नहीं करती है।

*****